

तुंहिजा चरण कमल मुंहिजो जीवनु धनु तूं आं मुंहिजो सरिवंस धनु॥

कमल खां कोमलु चरण कमल प्रभू पतित पावन करता

आरत अधम उधारण शरणागति दुख हरता

दींह राति करियां थो सिमरणु॥

जिनि जिनि ओटवती चरणनिजी से थिया पारगामी

राम भगति जो दानु दिये थो शोभा सागर स्वामी

कोटवार करियां वन्दु॥

दीननि बंधू सद्दिडे सहायकु दीन दयालु धणी आ

रोई जिनि लीलायो लालन तिनि ते कृपा घणी आ

थियो सफलु तिनि जो तनु मनु॥

गुण आगर रस सागर प्रीतम अति उदार प्रभू प्यारा

जग मंगल जगदीश जगत गुर प्रेम भक्ति भण्डारा

तुंहिजो अमृत खां मिठो बोलणु॥

कोट तीर्थ सम पावन तुंहिजा चरण कमल सुखधामा

दासनि मन मधुपति हित नितु ही मंगल मय विश्रामा

श्रीराम सनेह सरसावन॥

अगम निगम सभु ग़ाइनि प्रभू तुंहिजी जस जी गाथा  
सदां सर्वदा रहीं स्वामी सन्तनि के संगि साथ  
रस जोति अखण्ड जगावन॥

प्रणत पाल जन रक्षक सतिगुर मैगसि चंद महाराजा  
चतुर चूड़ामणि भोर स्वभावा त्रिभुवन के सिरताजा  
चिरु जीवो भक्तनि भावन॥